

धर्मरत्न ब्रह्मचार्य सुरत श्री महाबिहार II-183

चक्र
१

ॐ नमो ॥ श्रीचक्रसंस्मृ-
त्याय ॥ एवंमया अत-
वान् ॥ सर्वगुह्या दु-
तस्ये मन्दलस्य मध्य

लाय ॥ ॐ नमो ॥ रत्नव-
र्षिकस्मीं समयभग-
भिषेकैर्विहरति स्म ॥
श्रीचक्रसम्बलचतुः

१
सं

मुष्पाप भमं कुरुस्तवाम्पे स्याम पक्षी मेरुगताः उत्तरे पिताः दहीनपा-
र्यः पथमः भुजे चः द्वितीयः भुजे खड्गः तृतीयः भुजे दंष्ट्रारूपा-
रिनेः वामे पासः पथमः भुजे चः द्वितीयः भुजे तर्जुलि पासः तृती-
यः पञ्चांगधारी नः ॥ ॥ का का स्या पितृजमडा की कुरु क्षपीता

ॐ नमो ॥ का स्या स्याता स्वाता स्या रता सुक

१
सं

चक्र
२

जमदूती पीतरगता जमदुष्टिरगतस्यामा जममथनिस्यामकृद्दत्त॥

॥ ततो ॥ ॐ सुभानिशुम्भ हूं हूं फर ॥ ॐ गृहनिगृह हूं हूं फर ॥

ॐ गृहापय २ हूं हूं फर ॥ ॐ आनय हो भगवन्वीक्षाराज हूं हूं
फर ॥ ईती मनुतर्पण ॥ ॥ अथ वाहनगाथा मंत्र ॥ ॐ विष्णु

२
सं

तानन हूं हूं ॥ चक्रसम्बलाम्बु ॥ आगच्छा २ सृष्टं प्रयेसय हूं हूं फर

॥ मन्दलमन्त्रितप्रवस्यत् ॥ मूलमन्त्रा ॥ ॐ सर्ववृक्ष

दाकीनिय हूं हूं फर ॥ ॐ वज्रवन्धाय हूं हूं फर ॥ ॐ वज्रवैलोचनी

य हूं हूं फर ॥ ॐ दाकीनीये हूं हूं फर ॥ ॐ राम्य हूं हूं फर ॥ ॐ खन्द

चक्र
३

रोहे हं हं फट् ॥ **ॐ** रूपि निय हं हं फट् ॥ **ॐ** कर २ ख न्द कपाले हं हं फ
ट् ॥ **ॐ** पच न्द हं हं फट् ॥ **ॐ** कुरु २ महा क की ल हं हं फट् ॥ **ॐ** च न्द
शि पय हं हं फट् ॥ **ॐ** व श्व २ के द्दी राय हं हं फट् ॥ **ॐ** प भाव तीय
हं हं फट् ॥ **ॐ** ता स म २ महा रामे हं हं फट् ॥ **ॐ** हिं २ मो ही नि

३
सं

^{की}
ये हं हं फट् ॥ **ॐ** हौ र वै द्या नी य हं हं फट् ॥ **ॐ** च क वर्ति निये हं हं फ
ट् ॥ **ॐ** वी थी २ महा देवी य हं हं फट् ॥ **ॐ** हि ली २ महा देवि य हं
हं फट् ॥ **॥ ॐ** का का स हं हं फट् ॥ **ॐ** उ ल का स्ये हं हं फट् ॥
ॐ स्वा ना स्य हं हं फट् ॥ **ॐ** सू कु ला स्य हं हं फट् ॥ **ॐ** ज म द्या कि नि

चक्र
४

यहं हुं फट् ॥ उँ जमट् नित्यहं हुं फट् ॥ उँ जमट् नित्यहं हुं फट् ॥ उँ
जममभनित्यहं हुं फट् ॥ ॥ अथ पूर्वी दी दार पार ॥ पूर्वः
दारे दा की नि कृष्णवर्णीयकमूखाचतुरश्रजादहीनपथ
मभुजदं सरूपधरं ॥ द्वितीय भुजकर्ति धरं ॥ वामपथमभुजाप

४
सं

त्वाग धरं ॥ द्वितीय भुजपात्रसूरासूकपास धरं ॥ पूर्व दारे स्थि
तां ॥ १ ॥ अथ दक्षिण दारे मौरां ॥ स्यामवर्णीयकमूखाच
तुरश्रजादहीनपथमभुजदं सरूपधरं ॥ द्वितीय भुजकर्ति
धरं ॥ वामपथमभुजरवत्वाग धरं ॥ द्वितीय भुजरगतपु

चक
५

रौ कपालधरं॥ डहीनदारेस्थिता॥ २ ॥ अथ पक्षीम
द्वारपा॥ पक्षीमदारेखन्दरोहारकवर्नीयेकमूषाचतुर्भुजा
॥ डहीनपथमभूजदम्बरुधरं॥ द्वितीयभूजकर्तीध्वरं॥
वामपथमभूजखत्वांगधरं॥ द्वितीयभूजरक्तपूर्णकपाल

५
सं

धरंपक्षीमस्थिमंभूजदारेस्थिता॥ ३ ॥ अथ उन्नद्वारपा
र॥ उत्तरदारेरूपिनिपीतवर्नयकमूषाचतुर्भुजा॥ दही
नपथमभूजदम्बरुधरं॥ द्वितीयभूजकर्तीध्वरं॥ वाम
पथमभूजखत्वांगधरं॥ द्वितीयभूजरक्तपूर्णपात्रधरं॥

चक्र
७

त्रैलोक्यवायूय ॥ ईशान ॥ ईर्ध्वाअर्धचन्द्रजूर्जे ॥ सर्वमारसगनप
रिवारानां सोखय २ मालय २ व श्रय २ मोहय २ सप्तसागरान् ॥
वन्ध २ हन २ सर्ववी २ ॥ नासय २ हुँ हुँ फट् स्वाहा ॥ ॐ सृष्ट
नीष्टी वजे स्वाहा ॥ ॐ चक्रसम्बलशूतम्बलं वज्रदाकीर्ण

७
सं

वीरेस्वरी ॥ प्रबलविगताधिराज ॥ कोलाराललिते वा
हयूस्थापशूथ ॥ कालं न्यामि सतरां मामीतवाधिपपं ॥ यो
र्गे कलस्ये भव ॥ वंश्च न भेदकानि विस्नारिवूथपरीशूथ ॥
सरीरसारं पु ध्वस्तदोषदुरीतां ॥ नरवाधरूपं ॥ संपूज्ये नौ

चक्र

८

मितवपाटसरोजरेनम॥

॥ ईती श्रीचक्रसम्बलायस्पृ

लमद्योनामधारनिसमाप्त॥

॥ येधर्माहेतूपचावाहेतु

तेषांतथागाटयेमदत्तत्पखां च योनीरोधऐवंवाडीमा

हाब्रवने॥

॥ शुभसंवत् १०३६ मीती आयुवर्षे निपसीधशुभ

८
सं

यानाज्येष्टकृष्णपक्षे १२ रोज १ यादीन चोया सिधय काशुतः

शुभः॥

॥

॥

॥

॥

॥ शुभः

१५

१५